MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:09 MAY 2026

प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड

भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में आज से तीन दिवसीय उदन्त मार्त्तण्ड का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह अयोध्या के आचार्य मिथिलेश नंदिनी शरण और पुडुचेरी के डॉ. सी जयशंकर बाबू ने दीप प्रज्वलित करके किया। इसमें डिजिटल समय में टीवी पत्रकारिता विषय पर चर्चा होगी। कार्यक्रम में विवि के कुलपति विजय मनोहर तिवारी, वीर भारत न्यास के अध्यक्ष श्रीराम तिवारी सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

'परिवार थे मनुष्य निर्माण की प्रयोगशाला, जिसे हमने कमजोर किया'

संवाद ● हिंदी पत्रकारिता के द्विशताब्दी वर्ष पर विमर्श 'प्रणाम उदंत मार्तंड' में आचार्य मिथिलेशनंदिनी शरण ने रखे विचार

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: आज डाक्टर, इंजीनियर बनाने के संस्थान हैं, लेकिन मनुष्य बनाने के संस्थान कहां हैं? यह संस्थान परिवार थे, जिसे हमने कमजोर कर दिया है। आज यह प्रयोगशाला कुछ शिथिल हो गई है। परस्पर विश्वास और संवाद कम हो गया है। यह इसलिए हुआ है, क्योंकि हमने अपने लिए कुछ नहीं सीखा है, बल्कि बाजार में बेचने के लिए अपने को तैयार किया है।

यह विचार अयोध्या के हनुमत निवास के पीठाधीश्वर आचार्य मिथिलेशनंदिनी शरण ने शुक्रवार को भारत भवन में व्यक्त किए। वे हिंदी पत्रकारिता के द्विशताब्दी वर्ष पर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) और वीर भारत न्यास के तीन दिवसीय संयुक्त आयोजन 'प्रणाम उदंत मार्तंड' के पहले दिन विशेष सत्र को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि जिन संस्थाओं और व्यवस्थाओं ने हमें तैयार किया है, बाजार ने उनके प्रति अविश्वास का भाव पैदा कर दिया है। इसके लिए तर्क दिया है कि यह जेनरेशन गैप के कारण है, जबकि जेनरेशन गैप जैसा कुछ होता नहीं है। अगर ऐसा है भी तो क्या इस गैप को भरने की हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। एक भ्रांति आई है कि सफलता पाने के लिए सिद्धांत मार्ग को छोड़ना पड़ता था।

अब हमें इस भ्रांति से बाहर निकलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि तर्कों से परिवार नहीं चलते, संबंध निभाने के भाव से ही चलते हैं। इसी में मनुष्यत्व का निर्माण होता है।

समारोह में उद्बोधन देते आचार्य मिथिलेशनंदिनी शरण।

समारोह में उद्बोधन देते दैनिक जागरण, नवदुनिया-नईदुनिया समाचारपत्र समूह के कार्यकारी संपादक विष्णु प्रकाश त्रिपाठी।

भारत भवन में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित 'प्रणाम उदंत मार्तंड' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श में उपस्थित अतिथि एवं प्रतिभागी। तनी छोटे ● नवदुनिया

शब्द तप और उसका सदुपयोग करने वाला तपस्वी: विष्णु प्रकाश त्रिपाठी

कार्यक्रम में अपने संबोधन में दैनिक जागरण, नवदुनिया-नईदुनिया समाचारपत्र समूह के कार्यकारी संपादक विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने स्वामी विवेकानंद के शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में दिए भाषण को याद किया। उन्होंने कहा कि जब स्वामी विवेकानंद ने उस मंच से प्यारे भाइयों और बहनो कहकर अपना संबोधन शुरू किया था, तभी पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा था। उन्होंने बताया कि पश्चिमी देशों की संस्कृति में भाईचारे और बहनत्व की भावना उतनी प्रबल नहीं थी, लेकिन स्वामी विवेकानंद ने इस संबोधन के जरिए भारतीय संस्कृति के विश्व बंधुत्व का संदेश पूरी दुनिया तक पहुंचा दिया। उन्होंने कहा कि अक्षर ब्रह्म होता है और उससे निर्मित शब्द परब्रह्म होता है। जो व्यक्ति अक्षरों और शब्दों की साधना करता है, वही ब्रह्मर्षि और महर्षि बनता है। शब्द स्वयं तप है और उसका सदुपयोग करने वाले ही सच्चे तपस्वी कहलाते हैं। एक साधक ही दूसरे साधकों का निर्माण कर सकता है। भारत की उत्कृष्टता, जागरण और सांस्कृतिक चेतना का संदेश हर व्यक्ति नहीं दे सकता, क्योंकि इसके लिए श्रेष्ठ आचरण और संस्कार आवश्यक हैं। यह कार्य केवल संत ही कर सकते हैं।

जिज्ञासाओं का किया समाधान, ताकि हटे भ्रम का पर्दा

प्रेम क्या है ?

● हम जिस प्रेम के लिए अपने माता-पिता से विद्रोह करते हैं, उस संदर्भ में हमें याद करना चाहिए कि वर्षों तक माता-पिता ने बिना किसी अपेक्षा के हमें प्रेम दिया है। यहां तक कि हमारे जन्म से पूर्व से ही माता-पिता हमें प्रेम देते हैं। वे अपने बच्चे के प्रेम में बाधा कैसे बन सकते हैं? दरअसल वे जानते हैं कि आप जिस प्रेम में है, वह प्रेम नहीं, भोग है।

भगवान राम ने सीता का परित्याग कर दिया, आज के जमाने में कितना उचित है?

● भगवान राम ने कभी सीता को अपने से अलग नहीं किया। राम के पुरखे एक से अधिक पत्नी रखते थे, लेकिन राम ने केवल सीता को ही अपने जीवन में स्थान दिया। जब उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। तब भी सीता की प्रतिमा को साथ रखकर आहुतियां दीं। परित्याग वाली बात भ्रम है।

आजकल माय बाडी, माय व्हाइस का चलन है, यह कहां तक सही है?

● माय बाडी, माय व्हाइस जैसा कुछ नहीं है। यह एक विचारधारा विशेष के लोगों द्वारा फैलाई गई गलत सोच है। किसी का शरीर उनका खुद नहीं, बल्कि उनके माता-पिता की देन है। हमारे शरीर में हमारे पूर्वजों का डीएनए है, तो शरीर हमारा कैसे हुआ? जब शरीर ही हमारा नहीं है तो हमारी व्हाइस कैसी?

इस समारोह में पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहुरकर, लेखक डा. सी. जयशंकर बाबू, वरिष्ठ पत्रकार राजेन्द्र शर्मा सहित देश भर से कई वरिष्ठ पत्रकार उपस्थित थे।

हिंदुस्तानियों का हित पत्रकारिता का स्थापित नैरेटिव: हिंदी के पहले समाचारपत्र उदंत मार्तंड पर बात करते हुए आचार्य मिथिलेशनंदिनी शरण ने कहा कि 200 वर्ष पहले पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने इस अखबार के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता की दिशा तय की थी। उन्होंने उसका उद्देश्य दिया था, 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' और यही पत्रकारिता का स्थापित नैरेटिव है। उन्होंने कहा, पत्रकार केवल घटनाओं का वर्णन करने वाला नहीं, बल्कि समाज की नाड़ी पहचानने वाला संवेदनशील वैद्य होता है।

पुस्तकों और समाचारपत्रों का लोकार्पण : पहले दिन एमसीयू के पूर्व विद्यार्थियों के अनुभव पर केंद्रित पुस्तक 'माखन के लाल' का विमोचन हुआ। कार्टून कथा नाम से एक और प्रणाम उदंत मार्तंड नाम से एक विशेष समाचार पत्र का विमोचन हुआ। इस दौरान एमसीयू के विद्यार्थियों के समाचारपत्र अभ्युदय और पहल के विशेषांकों का भी विमोचन हुआ।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA'09 MAY.2026

माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय समारोह शुरू

'उदन्त मार्त्तण्ड' ने तय किया था पत्रकारिता का नैरेटिव : मिथिलेशनन्दिनीशरण

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

पंडित युगलकिशोर शुक्ल जी ने 200 वर्ष पहले एक ही पंक्ति 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' लिखकर सदियों के लिए पत्रकारिता का नैरेटिव तय कर दिया था। यह विचार हनुमत निवास, अयोध्या के आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने व्यक्त किया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि डॉक्टर, इंजीनियर बनाने के संस्थान हैं, लेकिन मनुष्य बनाने के संस्थान कहाँ हैं? यह संस्थान परिवार थे, जिसे हमने कमजोर कर दिया है। हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के प्रसंग पर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित तीन दिवसीय समारोह 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' का आयोजन भारत भवन में किया जा रहा है। मिथिलेशनन्दिनीशरण ने कहा कि मनुष्य निर्माण की सबसे मजबूत प्रयोगशाला परिवार है। आज यह प्रयोगशाला कुछ शिथिल हुई है। परस्पर विश्वास और संवाद कम हो गया है। यह इसलिए हुआ है क्योंकि हमने अपने लिए कुछ नहीं सीखा है बल्कि बाजार में बेचने के लिए अपने को तैयार किया है।

इस अवसर पर वरिष्ठ संपादक विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अक्षर ब्रह्म होता है और उस अक्षर से जो शब्द निर्मित होता है परब्रह्म होता है। जो अक्षर और शब्द की साधना करता है, वे ब्रह्मर्षि और महर्षि होते हैं। वहीं, वरिष्ठ संपादक राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने 'उत्तिष्ठ भारत' का आह्वान सोए हुए भारत को जगाने के लिए किया। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने आधुनिक तकनीक और पत्रकारिता के सामने मौजूद खतरों पर गंभीर बात की।

पहले मिशन थी पत्रकारिता : उदय माहुरकर

भारत सरकार के पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहुरकर ने कहा कि स्वतंत्रता से पहले पत्रकारिता एक 'मिशन' थी। आज के दौर में पत्रकार को लेफ्ट या राइट की विचारधारा से ऊपर उठकर 'नेशन फर्स्ट' (राष्ट्र प्रथम) के सिद्धांत पर सत्य को प्रदर्शित करना चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि भारत 2037 तक आर्थिक, व्यापारिक और सामरिक रूप से श्रेष्ठ हो जाएगा लेकिन क्या भारत सांस्कृतिक रूप से वहां होगा, जहां उसे होना चाहिए। लेखक एवं प्राध्यापक डॉ. सी. जयशंकर बाबू ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्ष की यात्रा में, दक्षिण भारत में हिंदी पत्रकारिता के 130 वर्ष की साझेदारी है। हिंदी पत्रकारिता का शुभारंभ गैर-हिंदी भाषी क्षेत्र से हुआ है। इसी प्रकार, भारतीय हिंदी साहित्य का शुभारंभ दक्षिण भारत से हुआ है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH'09 MAY.2026

दो वर्ष पहले ही 'उदन्त मार्तण्ड' ने तय कर दिया था पत्रकारिता का नैरेटिव : मिथिलेशनन्दिनीशरणजी

भोपाल। पंडित युगलकिशोर शुक्ल जी ने 200 वर्ष पहले एक ही पंक्ति 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' लिखकर सदियों के लिए पत्रकारिता का नैरेटिव तय कर दिया था। यह विचार हनुमत निवास, अयोध्या के आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने व्यक्त किया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि डॉक्टर, इंजीनियर बनाने के संस्थान हैं, लेकिन मनुष्य बनाने के संस्थान कहाँ हैं? यह संस्थान परिवार थे, जिसे हमने कमजोर कर दिया है। हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के प्रसंग पर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित तीन दिवसीय समारोह 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' का आयोजन भारत भवन में किया जा रहा है। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत एक विशेष सत्र 'उत्तिष्ठ भारत' में आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने अपना पाथेय प्रदान किया और उपस्थित विद्यार्थियों एवं अन्य लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

इस अवसर पर आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण जी ने कहा कि मनुष्य निर्माण की सबसे मजबूत प्रयोगशाला परिवार है। आज यह प्रयोगशाला कुछ शिथिल हुई है। परस्पर विश्वास और संवाद कम हो गया है। यह इसलिए हुआ है क्योंकि हमने अपने लिए कुछ नहीं सीखा है बल्कि बाजार में बेचने के लिए अपने को तैयार किया है। उन्होंने कहा कि जिन संस्थाओं और व्यवस्थाओं ने हमें तैयार किया है, बाजार ने उनके प्रति अविश्वास का भाव पैदा कर दिया है। इसके लिए तर्क दिया है कि जीवन मूल्यों में यह कमी जेनरेशन गैप के कारण है। जबकि जेनरेशन गैप जैसा कुछ होता नहीं है। अगर ऐसा है भी तो क्या इस गैप को भरने की हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। आचार्य ने कहा कि एक भ्रांति आई है कि सफलता पाने के लिए सिद्धांतों के मार्ग को छोड़ना पड़ता था। इस भ्रांति से बाहर निकलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सही-गलत होने से या तर्कों से परिवार नहीं चलता है। संबंध निभाने के भाव से ही परिवार चलते हैं। इसी में मनुष्यत्व का निर्माण होता है।

उन्होंने आग्रह किया कि हमें फिल्मों और सीरियल से अपने धर्म को, ग्रंथों को और कहानियों को समझने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अपने धर्म को समझने के लिए हमें मूल ग्रंथ पढ़ने चाहिए। युवा को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि युवा होने का है अपनी आग

को संभालने की शक्ति आ जाना।

इस अवसर पर वरिष्ठ संपादक विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अक्षर ब्रह्म होता है और उस अक्षर से जो शब्द निर्मित होता है परब्रह्म होता है। जो अक्षर और शब्द की साधना करता है, वे ब्रह्मर्षि और महर्षि होते हैं। वहीं, वरिष्ठ संपादक राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने 'उत्तिष्ठ भारत' का आह्वान सोए हुए भारत को जगाने के लिए किया। स्वामी विदेश में हिन्दू धर्म का डंका बजाने के लिए गए और कहा कि गर्व से कहो हम हिन्दू हैं। जब वे भारत लौट तो भारत की माटी को अपने माथे से लगाया। इस सत्र का संचालन वरिष्ठ पत्रकार शिफाली पांडेय ने किया।

पत्रकारिता जगत का सूर्य है 'उदन्त मार्तण्ड'

अयोध्या के हनुमत निवास के पीठाधीश्वर आचार्य मिथिलेश नंदिनीशरण ने कहा कि दो शताब्दी पहले एक मनीषी ने एक चिंता व्यक्त की उसका प्रतीक है उदन्त मार्तण्ड। उनके मन में आया कि हमारे संवाद बाहरी भाषा में क्यों हो, मातृभाषा में क्यों नहीं? अपनी भाषा और उससे बनते संवाद में पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' के रूप में किया।द्य

उन्होंने 'उदन्त मार्तण्ड' शीर्षक को स्पष्ट करते हुए बताया कि 'उदन्त' यानी समाचार और 'मार्तण्ड' यानी सूर्य। नैरेटिव की शक्ति पर आचार्य ने कहा कि शुक्ल जी ने पहली ही पंक्ति में 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' लिखकर सदियों के लिए पत्रकारिता का नैरेटिव तय कर दिया था।

आचार्य जी ने कहा कि पत्रकारिता समाज की सेवा में नियुक्त व्यवस्था है। पत्रकारिता सत्ता या विपक्ष का झंडा उठाने के लिए नहीं है। पत्रकारिता का दायित्व सत्य की रक्षा करना और उसे ही व्यक्त करना है।

एआई और डीप फेक स्वर्ण मृग हैं, इनसे सावधान रहें : कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने के इस प्रसंग पर हम पंडित युगलकिशोर शुक्ल और हिंदी पत्रकारिता को याद करेंगे।

कुलगुरु ने आधुनिक तकनीक और पत्रकारिता के सामने मौजूद खतरों पर गंभीर बात की। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीपफेक को 'स्वर्ण मृग' (मायावी सोने का हिरण) बताया। यदि छात्र इस मायावी जाल में फँसे, तो वे त्रेता युग में नहीं हैं जहाँ सुखांत होगा बल्कि कलयुग में है जहां एक गलती से 'वनवास' में 14 साल कोर्ट-कचहरी और मानहानि के चक्करों में बीत जाएंगे।

मिशनरी जर्नलिज्म बनाम 'नेशन फर्स्ट' : -उदय माहुरकर- भारत सरकार के पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहुरकर ने पत्रकारिता के इतिहास और वर्तमान ध्रुवीकरण पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता से पहले पत्रकारिता एक 'मिशन' थी। आज के दौर में पत्रकार को लेफ्ट या राइट की विचारधारा से ऊपर उठकर 'नेशन फर्स्ट' (राष्ट्र प्रथम) के सिद्धांत पर सत्य को प्रदर्शित करना चाहिए।

राम कार्य की दृष्टि से हिंदी की सेवा करें : लेखक एवं प्राध्यापक डॉ. सी. जयशंकर बाबू ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्ष की यात्रा में, दक्षिण भारत में हिंदी पत्रकारिता के 130 वर्ष की साझेदारी है। हिंदी पत्रकारिता का शुभारंभ गैर-हिंदी भाषी क्षेत्र से हुआ है। इसी प्रकार, भारतीय हिंदी साहित्य का शुभारंभ दक्षिण भारत से हुआ है। इतिहास के पुनर्लेखन में यह बात प्रमुखता से दर्ज होनी चाहिए। तमिल के पत्रकार सुब्रमण्यम भारती ने 1906 में तमिल समाचार पत्र में हिंदी के समाचारों को शामिल किया। दक्षिण में हिंदी की चेतना को देखना है तब आपको 18वीं सदी के केरल के श्रीराम वर्मा का नाम याद रखना होगा। राम कार्य को करने की जो दृष्टि चाहिए, उसी चेतना के साथ दक्षिण भारत में हिंदी की सेवा की जाती है। कहा जाता है कि तमिलनाडु में हिंदी का विरोध है लेकिन कोई यह नहीं बताता कि 1950 के दशक में तमिलनाडु सरकार का हिंदी का समाचार पत्र प्रकाशित हुआ था।

डिजिटल समय में टीवी पत्रकारिता : वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण दुबे, बृजेश राजपूत, सलमान रावी, दीप्ति चौरसिया, सुधीर दीक्षित और अनुराग द्वारी ने 'डिजिटल समय में टीवी पत्रकारिता' पर अपने विचार साझा किए और विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। सबने माना कि डिजिटल दौर में टीवी पत्रकारिता के सामने चुनौतियां तो आई हैं लेकिन लोग अभी भी टीवी के प्रति आकर्षित हैं। सत्र संचालन विश्वविद्यालय की पूर्व विद्यार्थी और पत्रकार संयुक्ता बनर्जी ने किया।

पुस्तकों और समाचारपत्रों का लोकार्पण

- 'माखन के लाल' : पूर्व विद्यार्थियों के अनुभव पर आधारित पुस्तक। इसके संपादक अतिथि शिक्षक विनयश्री नेमा हैं।
- कार्टून कथा : कॉफी टेबल बुक है, जिसमें 9 कार्टूनिस्ट के कार्टून शामिल किए गए हैं।
- प्रणाम उदन्त मार्तण्ड : कुलगुरु संपादकीय टीम में शामिल विद्यार्थियों का समाचार पत्र।
- अभ्युदय : नए सत्र के शुभारंभ पर केंद्रित समाचार पत्रिका। अंग्रेजी भाषा में इस पत्रिका का संपादन पत्रकारिता विभाग के बीए-इग्लिश जर्नलिज्म के विद्यार्थियों ने किया है।
- पहल : ईरान, इजराइल और अमेरिका के युद्ध पर केंद्रित विद्यार्थियों का प्रायोगिक समाचार पत्र। यह समाचारपत्र जनसंचार विभाग के विद्यार्थी प्रकाशित करते हैं।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SUBAH SABARE'09 MAY.2026

प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड पत्रकारिता का मूल नरेटिव हिंदुस्तानियों के हित के लिए ही हो

हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने पर भारत भवन में तीन दिवसीय समारोह का शुभारंभ

● भोपाल / राज न्यूज नेटवर्क

हिंदी पत्रकारिता के 200 गौरवशाली वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारत भवन में तीन दिवसीय विशेष आयोजन 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' का भव्य शुभारंभ हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के पहले दिन देश भर के प्रख्यात पत्रकारों और विद्वानों ने शिरकत की।

मुख्य वक्ता उप्र के अयोध्या के आचार्य मिथिलेश नन्दिनीशरण ने उत्तिष्ठ भारत सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने 200 वर्ष पूर्व हिंदुस्तानियों के हित के हेत लिखकर पत्रकारिता का जो नरेटिव तय किया था, वह आज भी शाश्वत है। उन्होंने कहा कि प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड पत्रकारिता का मूल नरेटिव हिंदुस्तानियों के हित के लिए ही होना चाहिए। उन्होंने पत्रकारिता को समाज का तत्वज्ञ वैद्य बताया जो समाज की नाड़ी पहचानता है। आचार्य ने सामाजिक मूल्यों पर बल देते हुए कहा कि परिवार ही व्यक्तित्व निर्माण की सबसे मजबूत प्रयोगशाला है और संबंधों को तर्क से नहीं, बल्कि निभाने के भाव से सींचा जाना

चाहिए। विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने आधुनिक तकनीक की चुनौतियों पर चर्चा करते हुए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीपफेक को स्वर्ण मृग की संज्ञा दी। उन्होंने विद्यार्थियों को चेताया कि इस मायावी जाल से सावधान रहने की आवश्यकता है। वहीं, भारत सरकार के पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहुरकर ने नेशन फर्स्ट (राष्ट्र प्रथम) के सिद्धांत पर जोर देते हुए कहा कि पत्रकारों को विचारधाराओं से ऊपर उठकर सत्य को प्रदर्शित करना चाहिए।

सत्र के दौरान डॉ. सी. जयशंकर बाबू ने हिंदी पत्रकारिता के प्रसार में दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया। साथ ही, वरिष्ठ पत्रकारों ने डिजिटल समय में टीवी पत्रकारिता विषय पर अपने अनुभव साझा किए।

इस अवसर पर माखन के लाल, कार्टून कथा और विद्यार्थियों द्वारा तैयार समाचार पत्रों प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड, अभ्युदय एवं पहल का लोकार्पण भी किया गया। तीन दिवसीय समारोह में 10 मई तक पत्रकारिता की यात्रा और भविष्य पर विभिन्न सत्रों में मंथन होगा।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'RAJ EXPRESS'09 MAY.2026

हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष

भारत भवन में तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श व समाचार पत्रों की प्रदर्शनी का आयोजन

'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' के जरिए हिंदी पत्रकारिता का सफर कोलकाता-बनारस तक पहुंचेगा

रिपोर्टर • IamBhopal
Mobile no. 9827080406

भारत भवन में शुक्रवार से हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड का शुभारंभ हुआ। यह आयोजन माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय व वीर भारत न्यास द्वारा 10 मई तक आयोजित किया गया है। कार्यक्रम का शुभारंभ अयोध्या से आए आचार्य मिथिलेशनंदिनीशरण ने किया। उन्होंने कहा कि मनुष्य निर्माण की सबसे मजबूत प्रगोगशाला परिवार है। आज यह प्रयोगशाला कुछ शिथिल हुई है। परस्पर विश्वास और संवाद कम हो गया है। यह इसलिए हुआ है क्योंकि हमने अपने लिए कुछ नहीं सीखा है बल्कि बाजार में बेचने के लिए अपने को तैयार किया है। आचार्य ने कहा कि एक भ्रांति आई है कि सफलता पाने के लिए सिद्धांतों के मार्ग को छोड़ना पड़ता था। इस भ्रांति से बाहर निकलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सही-गलत होने से या तर्कों से परिवार नहीं चलता है, संबंध निभाने के भाव से ही परिवार चलते हैं। इस मौके पर पत्रकारिता की 200 साल की यात्रा पर प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र रही।

देखें पेज-14

भारत भवन में बना न्यूज रूम, स्टूडेंट्स ने निकाला अखबार

वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने कहा कि उदन्त मार्तण्ड हिंदुस्तानियों के हित के हेय, कार्यक्रम के माध्यम से भारत के स्वाधीनता संग्राम, वंदे मारतम की भावना तथा राष्ट्र के उद्भव, अभ्युदय और संघर्षपूर्ण यात्रा को रेखांकित करता है। इस पहल के तहत अन्य समाचार पत्र, पत्रिकाओं के योगदान को भी सामने लाने का प्रयास है। यह अभियान भोपाल से शुरू होकर कोलकाता, बनारस व हिंदी के तमाम प्रमुख केंद्रों पर पहुंचेगा। समारोह में डॉ. सी.जयशंकर बाबू उपस्थित रहे। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि यह आयोजन पत्रकारिता की प्रयोगशाला बनने जा रहा है। तीन दिन में 60 मेघावी संपादक, अध्येता, कार्टूनिस्ट और पत्रकार आयोजन में शामिल होंगे। हम तीनों संचार माध्यम में आयोजन का दस्तावेजीकरण करेंगे। भारत भवन में छात्रों के लिए बने न्यूज रूम के तहत कुलगुरु संपादकीय टीम में शामिल छात्रों ने प्रणाम उदन्त मार्तण्ड अखबार निकाला।

मराठा हथियारों की मेकिंग प्रोसेस प्रदर्शित

महाराष्ट्र के पुणे स्थित कोर हेरिटेज द्वारा शिवकालीन ऐतिहासिक शस्त्रास्त्र प्रदर्शनी के तहत वर्षों पुरानी भारतीय तलवारों की विविधताओं में कवच, बच्चों और वीरांगनाओं के शस्त्र, इस्लामिक तलवार, विशेष मराठा शस्त्रों, यूरोपीय शस्त्र समेत कई शस्त्रों का एग्जीबिशन किया गया है। सबसे आकर्षक रही तलवारों और हथियारों के मेकिंग प्रोसेस का एग्जीबिशन, जिसमें लोहे के कच्चे रूप से लेकर उसके हथियार बनाने तक की प्रक्रिया शामिल है। 29 जनवरी 1780 को शुरू हुए भारत के पहले समाचार पत्र हिक्कीज बंगाल गजट और 30 मई 1826 को शुरू हुए पहले हिंदी समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड समेत पुराने समाचार पत्रों की प्रदर्शनी लगाई गई है।

शिवाजी महाराज के समय के हथियार

ये सारे शस्त्र मुझे मेरे पुरखों से मिले हैं। इस शस्त्र संस्कृति को मैंने अपने तक निजी न रखते हुए राष्ट्र और समाज को समर्पित कर दिया है। मंगल पाण्डेय की बंदूक मैंने ढूंढी थी। कुल 18 हजार शस्त्रों का संग्रह हो चुका है। कोर हेरिटेज शस्त्र संस्कृति को संभालने वाली इकलौती संस्था है। सबसे पुराना हथियार स्टोन एज का है। छत्रपति शिवाजी महाराज के समय इस्तेमाल हुए हथियारों पर शोध पुस्तक तैयार की गई। -राकेश राव, रिसर्च डायरेक्टर, कोर हेरिटेज संस्था

उदन्त मार्तण्ड, बंगाल गजट अखबार।

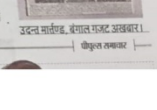

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PEOPALS SAMACHAR'09 MAY.2026

हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने पर तीन दिवसीय आयोजन

मनुष्य निर्माण की प्रयोगशाला हैं परिवार पर कम हुआ विश्वास व संवाद: आचार्य

पत्रिका

सिटी रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. डॉक्टर, इंजीनियर बनाने के संस्थान हैं, लेकिन मनुष्य बनाने के संस्थान कहां हैं। यह संस्थान परिवार थे, जिसे हमने कमजोर कर दिया है। यह विचार हनुमत निवास, अयोध्या के आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने व्यक्त किए। वे शुक्रवार को भारत भवन में हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के प्रसंग पर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित तीन दिवसीय समारोह 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' में बोल रहे थे। विशेष सत्र उत्तिष्ठ भारत में उन्होंने विद्यार्थियों एवं मौजूद श्रोताओं जिज्ञासा का समाधान किया।

उन्होंने कहा कि परिवार का परस्पर विश्वास और संवाद कम हो गया है। यह इसलिए हुआ है क्योंकि हमने अपने लिए कुछ नहीं सीखा है बल्कि बाजार में बेचने के लिए अपने को तैयार किया है। आचार्य ने कहा कि एक भ्रांति आई है कि सफलता पाने के लिए सिद्धांतों के मार्ग को छोडना पड़ता था। इस भ्रांति से बाहर निकलने की आवश्यकता है। सही-गलत होने से या तर्कों से परिवार नहीं चलता है। संबंध निभाने के भाव से ही परिवार चलते हैं। इसी में मनुष्यत्व का निर्माण होता है। प्रेम क्या है इसके उत्तर में आचार्य ने कहा कि प्रेम भोग नहीं है। इस मौके पर पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहूरकर, विष्णुदत्त त्रिपाठी, राजेंद्र शर्मा, प्राध्यापक डॉ. सी. जयशंकर बाबू, प्रवीण दुबे, बृजेश राजपूत, सलमान रावी, दीप्ति चौरसिया, सुधीर दीक्षित और अनुराग द्वारी ने भी विभिन्न सत्रों में विचार रखे।

कार्टूनिस्ट अभिषेक तिवारी और शिरीष श्रीवास्तव सम्मानितत किए गए

पत्रिका के अभिषेक व शिरीष सम्मानित

समारोह में राजस्थान पत्रिका (जयपुर) के वरिष्ठ कार्टूनिस्ट अभिषेक तिवारी और पत्रिका भोपाल के वरिष्ठ कार्टूनिस्ट शिरीष श्रीवास्तव को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में देशभर से आए कार्टूनिस्ट देवेंद्र शर्मा, शेख सुभानी, माधव जोशी, चंद्रशेखर हाडा, हरिमोहन वाजपेयी, त्रयम्बक शर्मा, हरिओम तिवारी को भी सम्मानित किया गया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PATRIKA'09 MAY.2026

हिन्दी पत्रकारिता के 200 साल पूरे

प्रणाम उदन्त मार्तण्ड समारोह में अयोध्या के आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने कहा-

हम डॉक्टर- इंजीनियर बना रहे, लेकिन मनुष्य बनाने में कमजोर

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 8 मई. पत्रकार कोई ज्योतिषी या केवल शव-परीक्षण करने वाला डॉक्टर नहीं है. वह समाज की नाड़ी पहचानने वाला एक निष्प्रिय और तत्वज्ञ वैद्य है. यह बात अयोध्या के प्रख्यात विद्वान आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने भोपाल के भारत भवन में आयोजित 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' समारोह में कही.

उन्होंने पत्रकारिता और समाज के अंतर्संबंधों पर गहरा प्रकाश डालते हुये कहा कि समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड के प्रणेता पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने 200 वर्ष पूर्व ही हिंदुस्तानियों के हित के हेत लिखकर इस क्षेत्र का शाश्वत नैरेटिव निर्धारित कर दिया था. बता दें तीन दिवसीय इस कार्यक्रम का आयोजन हिंदी पत्रकारिता के 200 साल पूरे होने के अवसर पर शुक्रवार को किया गया. कार्यक्रम में सामाजिक मूल्यों पर चिंता व्यक्त करते हुए आचार्य ने कहा कि आज हम डॉक्टर और इंजीनियर तो बना रहे हैं, लेकिन मनुष्य बनाने वाले संस्थान यानी 'परिवार' कमजोर हो रहे हैं. उन्होंने बाजारवाद का प्रभाव पर बात रखते हुये कहा कि हमने खुद को सीखने के बजाय बाजार में 'बेचने' के लिए तैयार किया है, जिससे आपसी विश्वास और संवाद घट रहा है. कार्यक्रम में डिजिटल युग में टीवी पत्रकारिता की चुनौतियों पर मंथन के साथ विद्यार्थियों द्वारा तैयार 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड', 'अभ्युदय' और 'पहल' जैसे प्रयोगात्मक समाचार पत्रों और 'माखन के लाल' व 'कार्टून कथा' जैसी पुस्तकों का भी लोकार्पण किया गया.

नेशन फर्स्ट विचारधारा से ऊपर राष्ट्र

कार्यक्रम में पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहुरकर ने वर्तमान ध्रुवीकरण पर कटाक्ष करते हुए कहा कि आज पत्रकारों को लेफ्ट या राइट की विचारधारा के बजाय नेशन फर्स्ट' के सिद्धांत पर अडिग रहना चाहिए. वहीं, डॉ. सी. जयशंकर बाबू ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि हिंदी पत्रकारिता की जडें दक्षिण भारत और गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी उत्तर भारत जितनी ही गहरी हैं.

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVBHARAT'09 MAY.2026

नगर में आज

- 'प्रणाम! उदंत मार्तण्ड': सुबह 10:30 बजे से, भारत भवन
- माह का प्रादर्श: सुबह 11 बजे से, मानव संग्रहालय
- चित्र प्रदर्शनी 'शलाका': दोपहर, 2 बजे से, जनजातीय संग्रहालय
- कला कार्यशाला: शाम 4 बजे से, प्रोफेसर कॉलोनी
- प्रस्तुतिपरक कार्यशाला: शाम 6 बजे से, गांधी भवन
- (यदि आप कोई कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं तो हमें मो. 9329573840 पर संपर्क करें)

अखिल भारतीय वाल्मीकि महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन आज से

भोपाल। अखिल भारतीय वाल्मीकि महासभा का 17 वां राष्ट्रीय अधिवेशन सनातन धर्म सभा ब्रह्म हल बीके दत्त कॉलोनी लोधी रोड नईदिल्ली पर 09 और 10 मई को रखा गया है। अखिल भारतीय वाल्मीकि महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी राजेश करोसिया (राजा भैया) ने बताया कि अधिवेशन का उद्घाटन राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हरदीप सिंह गिल, मध्य प्रदेश राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष प्रताप करोसिया, डा. राजू मिश्रा की उपस्थिति में होगा। शुभारंभ के पश्चात अखिल भारतीय वाल्मीकि महासभा के राष्ट्रीय पदाधिकारी के चुनाव चुनाव अधिकारी सतीश बिडला तेलंगाना हैदराबाद व सहायक निर्वाचन अधिकारी डॉक्टर रेखा बहनवाल महाराष्ट्र, नरेंद्र नाहर मध्य प्रदेश भोपाल, कृपाराम वाल्मीकि लखनऊ उत्तर प्रदेश, डा रामेश्वर सेठ नई दिल्ली, जय राज धौलपुरे अधिवक्ता जबलपुर मध्य प्रदेश, चिमनलाल डर जबलपुर मध्य प्रदेश के सान्निध्य में संपन्न होंगे।

भारत भवन में 'प्रणाम! उदन्त मार्त्तण्ड' समारोह का शुभारंभ

'अखंड भारत' के भाव से शुरु हुआ था हिंदी का पहला पत्र 'उदन्त मार्त्तण्ड'

पहले दिन दो वैचारिक सत्र तथा प्रकाशनों के लोकार्पण हुए

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

पंडित युगलकिशोर शुक्ल जी ने 200 वर्ष पहले एक ही पंक्ति 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' लिखकर सदियों के लिए पत्रकारिता का नैरेटिव तय कर दिया था। हिंदी का यह पहला पत्र समाज को जगाने के लिए 'अखंड भारत' के भाव से शुरु हुआ था। यह कहना है हनुमत निवास, अयोध्या के पीठाधीश्वर आचार्य मिथिलेशनंदिनीशरण का। वे शुक्रवार को भारत भवन में हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के प्रसंग पर आयोजित तीन दिनी समारोह 'प्रणाम! उदन्त मार्त्तण्ड' के शुभारंभ सत्र की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। समारोह का आयोजन माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर किया जा रहा है। समारोह के पहले दिन दो सत्रों में विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श हुए। आचार्य मिथिलेशनंदिनीशरण ने कहा कि दो शताब्दी पहले एक मनीषी ने एक चिंता व्यक्त की उसका प्रतीक है उदन्त मात्तण्ड। उनके मन में आया कि हमारे संवाद बाहरी भाषा में क्यों हो, मातृभाषा में क्यों नहीं? अपनी भाषा और उससे बनते संवाद में पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' के रूप में पत्रकारिता को पहचाना था। आचार्य जी ने 'उदन्त मार्त्तण्ड' शीर्षक को स्पष्ट करते हुए बताया कि 'उदन्त' अर्थात समाचार और 'मार्त्तण्ड' अर्थात 'सूर्य'। जैसे सूर्योदय बिना लोग नहीं जागते, वैसे ही यह हिंदी का पहला पत्र समाज को जगाने के लिए 'अखंड भारत' के भाव से शुरू हुआ था।

सत्य की रक्षा करना ही पत्रकार का दायित्व

आचार्य जी ने समाज में एक पत्रकार की भूमिका स्पष्ट करते हुए कहा कि पत्रकार कोई भविष्यवक्ता या केवल पोस्टमार्टम करने वाला डॉक्टर नहीं है, बल्कि वह समाज का 'निषप्रिय और तत्वज्ञ वैद्य' है, जो समाज की नाड़ी पहचानता है। पत्रकारिता समाज की सेवा में नियुक्त व्यवस्था है। पत्रकारिता सत्ता या विपक्ष का झंडा उठाने के लिए नहीं है। पत्रकारिता का दायित्व सत्य की रक्षा करना और उसे ही व्यक्त करना है। विषय प्रवर्तन करते हुए भारत सरकार के पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहुरकर ने पत्रकारिता के इतिहास और वर्तमान ध्रुवीकरण पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता से पहले पत्रकारिता एक 'मिशन' थी। आज के दौर में पत्रकार को लेफ्ट या राइट की विचारधारा से ऊपर उठकर 'नेशन फर्स्ट' (राष्ट्र प्रथम) के सिद्धांत पर सत्य को प्रदर्शित करना चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि भारत 2037 तक आर्थिक, व्यापारिक और सामरिक रूप से श्रेष्ठ हो जाएगा लेकिन क्या भारत सांस्कृतिक रूप से वहां होगा, जहां उसे होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को 'राष्ट्र पहले' के आधार पर अपनी पत्रकारिता करनी चाहिए। सत्र में उपस्थित लेखक एवं प्राध्यापक डॉ. सी. जयशंकर बाबू ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्ष की यात्रा में, दक्षिण भारत में हिंदी पत्रकारिता के 130 वर्ष की साझेदारी है। हिंदी पत्रकारिता का शुभारंभ गैर-हिंदी भाषी क्षेत्र से हुआ है। इसी प्रकार, भारतीय हिंदी साहित्य का शुभारंभ दक्षिण भारत से हुआ है। इतिहास के पुनर्लेखन में यह बात प्रमुखता से दर्ज होनी चाहिए। तमिल के पत्रकार सुब्रमण्यम भारती ने 1906 में तमिल समाचार पत्र में हिंदी के समाचारों को शामिल किया। दक्षिण में हिंदी की चेतना को देखना है तब आपको 18वीं सदी के केरल के श्रीराम वर्मा का नाम याद रखना होगा। राम कार्य को करने की जो दृष्टि चाहिए, उसी चेतना के साथ दक्षिण भारत में हिंदी की सेवा की जाती है। उन्होंने कहा कि यह जरूर कहा जाता है कि तमिलनाडु में हिंदी का विरोध है लेकिन कोई यह नहीं बताता कि 1950 के दशक में तमिलनाडु सरकार का हिंदी का समाचार पत्र प्रकाशित होता था। आज भी हिंदी वाणी, भारत वाणी और हिंदी मिलाप जैसे समाचार पत्र हिंदी और दक्षिण भाषी शब्दों के मेल से हैं। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने के इस प्रसंग पर हम पंडित युगलकिशोर शुक्ल और हिंदी पत्रकारिता को याद करेंगे। 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत'। यह ध्येय वाक्य बताता है कि समाचार पत्र क्यों प्रकाशित होने चाहिए।

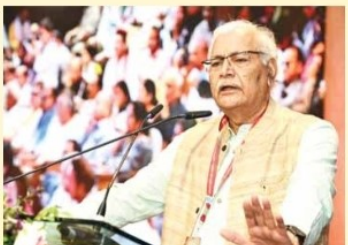

पुस्तकों और समाचार पत्रों का लोकार्पण

शुभारंभ सत्र में विश्वविद्यालय द्वारा पूर्व विद्यार्थियों के अनुभव पर आधारित पुस्तक 'माखन के लाल' तथा कॉफी टेबल बुक 'कार्टून कथा' का लोकार्पण किया गया। इसके साथ ही विद्यार्थियों द्वारा तैयार पत्र 'प्रणाम! उदन्त मार्त्तण्ड' तथा 'अभ्युदय: नए सत्र के शुभारंभ पर केंद्रित समाचार पत्रिका का लोकार्पण किया गया।

'अस्त्र-शस्त्रों' में जीवंत हुआ छत्रपति शिवाजी महाराज का युग

समारोह स्थल पर 'अस्त्र-शस्त्रों' पर केंद्रित प्रदर्शनी भी लगाई गई है। इसका आयोजन पुणे की कोर हेरिटेज संस्था द्वारा किया गया है। प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए दर्शकों को छत्रपति शिवाजी महाराज के काल का अहसास होता है। इन शस्त्रों को देखते हुए महसूस होता है कि शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित हिंदवी साम्राज्य का सैन्य उत्कर्ष केवल वीरता पर आधारित नहीं था, बल्कि भूगोल, गतिशील युद्धनीति, हल्के लेकिन प्रभावी अस्त्र-शस्त्र, और स्थानीय संसाधनों के उत्कृष्ट उपयोग पर आधारित था। उनके शस्त्रों के अनेक प्रकार थे। उनमें तलवारें, भाला-बरछा, बिचवा वाघनख आदि प्रमुख थे। मराठा सेना में तलवार सबसे प्रतिष्ठित हथियार थी। इसके कई प्रकार प्रचलित थे जैसे सीधी या हल्की वक्र- निकट युद्ध में उपयोगी तेज गति से वार करने के लिए उपयोगी होती थी। दूसरा प्रकार धोप तलवार थी जो लंबी, भारी और दोधारी होती थी ये तलवार कवचधारी शत्रु पर प्रभावी हमला करने के लिए अनुकूल मानी जाती थी। तीसरा प्रकार फिरंगी तलवारों का हुआ करता था। ये तलवारें यूरोपीय ब्लेड के मिश्रण से बनी थी। इसी तरह भाला घुड़सवार सेना का मुख्य हथियार होता था। इससे तेज दौड़ते घोड़े से वार किया जाता था। बरछा- भाले से छोटा होता था, इसका उपयोग पैदल सैनिक किया करते थे। बिचवा/ वाघनख पंजे जैसा गुप्त हथियार होता था जिसे पंजे में पहना जाता था। उसका उपयोग शिवाजी महाराज ने अफजल खान वध में किया था। ढाल- चमड़े की ढाल, धातुयुक्त ढाल, हल्की गोल ढाल कवच - सिर, छाती, हाथ आदि की दुश्मन के शास्त्रों के प्रहार से रक्षा के लिए उपयोग होता था। यह सभी शस्त्र इस प्रदर्शनी में उपलब्ध हैं, जिन्हें देखकर या छूकर दर्शक सहज ही राजे-महाराजों के दौर में लड़े गए युद्ध और वीरता की अनुभूति कर सकता है। प्रदर्शनी तीनों दिन समारोह स्थल पर उपलब्ध रहेगी।

स्वामी विवेकानंद ने भारत को जगाने का आव्हान किया

समारोह के पहले दिन दो विचार सत्र भी हुए। इनमें पहला 'डिजिटल युग में पत्रकारिता' विषय पर परिचर्चा सत्र था। जबकि दूसरे सत्र में 'उत्तिष्ठ भारत' विषय पर आचार्य मिथिलेशनंदिनीशरण का मुख्य वक्तव्य हुआ तथ वरिष्ठ पत्रकारों के व्याख्यान तथा संवाद हुए। मुख्य वक्तव्य देते हुए आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण जी ने कहा कि मनुष्य निर्माण की सबसे मजबूत प्रयोगशाला परिवार है। आज यह प्रयोगशाला कुछ शिथिल हुई है। परस्पर विश्वास और संवाद कम हो गया है। यह इसलिए हुआ है क्योंकि हमने अपने लिए कुछ नहीं सीखा है बल्कि बाजार में बेचने के लिए अपने को तैयार किया है। उन्होंने कहा कि यह तर्क दिया जाता है कि जीवन मूल्यों में यह कमी जेनरेशन गैप के कारण है। जबकि ऐसा कुछ नहीं होता।

उन्होंने प्रश्न किया कि यदि ऐसा है भी तो इसे भरने की जिम्मेदारी किसकी है? विषय पर विचार व्यक्त करते हुए 'स्वदेश ज्योति' पत्र समूह के प्रधान संपादक राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने 'उत्तिष्ठ भारत' का आह्वान सोए हुए भारत को जगाने के लिए किया। स्वामी विवेकानंद विदेश में हिन्दू धर्म का डंका बजाने के लिए गए और कहा कि गर्व से कहो हम हिन्दू हैं। उन्होंने कहा कि यह वह समय था जब भारत में कुछ लोग स्वयं को 'गधा' कहलाना पसंद करते थे किंतु 'हिन्दू' नहीं। उन्होंने कहा कि जिस समय स्वामी विवेकानंद हिंदुओं का गौरव जगा रहे थे उसी समय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार इसी भाव का विस्तार कर रहे थे। उन्होंने आगे कहा कि स्वामी विवेकानंद जब भारत लौटे तो भारत की माटी को अपने माथे से लगाया। हिन्दू समाज की कमजोरी के कारण भारत कमजोर और विभाजित हुआ था। हिन्दू सबके कल्याण की बात करता है।

उन्होंने कहा कि हम ऐसे मनुष्य बनें जो भारत को आगे लेकर जाएं, मानवीय मूल्यों की रक्षा करें। इस अवसर पर वरिष्ठ संपादक विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अक्षर ब्रह्म होता है और उस अक्षर से जो शब्द निर्मित होता है परब्रह्म होता है। जो अक्षर और शब्द की साधना करता है, वे ब्रह्मर्षि और महिर्षि होते हैं। सत्र के अंत में श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी आचार्य जी ने किया। सत्र का संचालन वरिष्ठ पत्रकार शिफाली पांडेय ने किया।

आज भी बरकार है टीवी पत्रकारिता का आकर्षण

इसके पूर्व 'डिजिटल समय में टीवी पत्रकारिता' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में टीवी पत्रकार प्रवीण दुबे, बृजेश राजपूत, सलमान रावी, दीप्ति चौरसिया, सुधीर दीक्षित और अनुराग द्वारी ने अपने विचार साझा किए और विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। सभी प्रतिभागियों ने एक स्वर से यह माना कि डिजिटल दौर में टीवी पत्रकारिता के सामने चुनौतियां तो आई हैं लेकिन लोग अभी भी टीवी के प्रति आकर्षित हैं। इस सत्र की संचालन विश्वविद्यालय की पूर्व विद्यार्थी और पत्रकार संयुक्ता बनर्जी ने किया।

भारत भवन में 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' शुरू : 200 वर्ष पहले तय हुआ था हिंदी पत्रकारिता का नैरेटिव

पत्रकारिता सत्ता नहीं, सत्य की पक्षधर हो : मिथिलेशनन्दिनीशरण

जागरण, भोपाल। हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने के ऐतिहासिक अवसर पर पत्रकारिता, भारतीय चिंतन और सामाजिक मूल्यों पर मंथन का एक बड़ा मंच सजा। भारत भवन में शुरू हुए तीन दिवसीय राष्ट्रीय आयोजन 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' का शुभारंभ हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित इस राष्ट्रीय विमर्श में देशभर के पत्रकार, संपादक, लेखक और मीडिया विशेषज्ञों ने न केवल हिंदी पत्रकारिता की गौरवशाली यात्रा को याद किया, बल्कि बदलते डिजिटल दौर में मीडिया की जिम्मेदारियों, नैतिकता और समाज में उसकी भूमिका पर भी गंभीर विमर्श किया। उद्घाटन सत्र में अयोध्या के हनुमत निवास पीठाधीश्वर आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने कहा कि पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने 200 वर्ष पहले 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' लिखकर पत्रकारिता का नैरेटिव तय कर दिया था। पत्रकारिता का उद्देश्य सत्ता का समर्थन या विरोध नहीं, बल्कि सत्य और समाजहित की रक्षा होना चाहिए।

एआई और डीपफेक को बताया 'स्वर्ण मृग'

विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने आधुनिक मीडिया की चुनौतियों पर बात करते हुए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीपफेक को 'स्वर्ण मृग' की संज्ञा दी। उन्होंने विद्यार्थियों को सावधान करते हुए कहा कि डिजिटल युग में एक छोटी गलती भी गंभीर परिणाम दे सकती है। पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहूरकर ने कहा कि आज पत्रकारिता को विचारधाराओं से ऊपर उठकर 'नेशन फर्स्ट' के सिद्धांत पर काम करने की जरूरत है।

पत्रकारिता, संस्कृति और संवाद पर गहन विमर्श

कार्यक्रम में 'डिजिटल समय में टीवी पत्रकारिता', भारतीय पत्रकारिता का वैचारिक अधिष्ठान और नए भारत के निर्माण जैसे विषयों पर चर्चाएं हुईं। वरिष्ठ पत्रकारों और संपादकों ने विद्यार्थियों के सवालों के जवाब भी दिए। इस दौरान 'माखन के लाल', 'कार्टून कथा' सहित विश्वविद्यालय के प्रायोगिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का लोकार्पण भी किया गया।

परिवार, प्रेम और मूल्यों पर आचार्य के विचार

विशेष सत्र 'उत्तिष्ठ भारत' में आचार्य ने परिवार को 'मनुष्य निर्माण की सबसे बड़ी प्रयोगशाला' बताया। उन्होंने कहा कि आज संवाद और विश्वास की कमी के कारण पारिवारिक मूल्य कमजोर हो रहे हैं। 'प्रेम क्या है' विषय पर उन्होंने कहा कि प्रेम केवल आकर्षण या भोग नहीं, बल्कि त्याग, विश्वास और समर्पण का भाव है। माता-पिता के निस्वार्थ प्रेम का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वास्तविक प्रेम वही है, जिसमें अपेक्षा नहीं होती। राम और सीता के प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में प्रेम मर्यादा और समर्पण से जुड़ा है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'DANIK JAGRAN'09 MAY.2026

हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने पर 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' का शुभारंभ

मनुष्य निर्माण की प्रयोगशाला हैं परिवार : आचार्य थिलेशनन्दिनीशरण

200 वर्ष पहले ही 'उदन्त मार्त्तण्ड' ने तय कर दिया था पत्रकारिता का नैरेटिव

हरिभूमि न्यूज ⏭ भोपाल

पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने 200 वर्ष पहले एक ही पंक्ति लिखकर सदियों के लिए पत्रकारिता का नैरेटिव तय कर दिया था। यह विचार अयोध्या के आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि डॉक्टर, इंजीनियर बनाने के संस्थान हैं, लेकिन मनुष्य बनाने के संस्थान कहां हैं यह संस्थान परिवार थे, जिसे हमने कमजोर कर दिया है। हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने पर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित तीन दिवसीय समारोह 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' का आयोजन भारत भवन में किया जा रहा है। कार्यक्रम में 'उत्तिष्ठ भारत' में आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण ने अपना पाथेय प्रदान किया और उपस्थित विद्यार्थियों एवं अन्य लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।आचार्य मिथिलेशनंदिनी शरण महाराज ने कहा कि दो शताब्दी पहले एक मनीषी ने एक चिंता व्यक्त की उसका प्रतीक है उदन्त मार्त्तण्ड। उनके मन में आया कि हमारे संवाद बाहरी भाषा में क्यों हो, मातृभाषा में क्यों नहीं। पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने पत्रकारिता को पहचाना था। उन्होंने 'उदन्त मार्त्तण्ड' शीर्षक को स्पष्ट करते हुए बताया कि पत्रकार कोई भविष्यवक्ता या केवल पोस्टमार्टम करने वाला डॉक्टर नहीं है, बल्कि वह समाज का 'निर्भय और तत्वज्ञ वैद्य' है, जो समाज की नाड़ी पहचानता है।

कार्यक्रम में अपने विचार रखते आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण।

एआई और डीप फेक स्वर्ण मृग हैं, इनसे सावधान रहें

कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पंडित युगलकिशोर ने 200 वर्ष पहले ही पत्रकारिता का नैरेटिव सेट कर दिया था। उन्होंने एआई और डीपफेक को स्वर्ण मृग बताया। उन्होंने कहा, यदि छल इस जाल में फंसे, तो वे त्रेता युग में नहीं हैं जहां सुधांत होगा बल्कि कलयुग में है जहां एक गलती से वनवास में 14 साल कोर्ट-कचहरी और मानहानि के वकीलों में बीत जाएंगे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'HARIBHOOMI'09 MAY 2026

Read scriptures, don't rely on films or TV serials: Acharya

Acharya Mithilesh Nandini Sharan releases book, Kartoon Katha, on completion of 200 years of Udant Martand at Bharat Bhavan on Friday. MCU vice chancellor Vijay Manohar Tiwari also present

Our Staff Reporter
BHOPAL

A scholar of Sanatan Dharma, Acharya Mithilesh Nandini Sharan from Hanumat Niwas, Ayodhya, said people should not try to understand religious scriptures through films and TV serials. "We should try to read the original scriptures to understand them," he said.

Sharan was speaking on the inaugural day of the three-day event Pranam Udant Martand at Bharat Bhavan in Bhopal on Friday. He also opposed the concept of love marriage, saying parents raise their children with unconditional love and care even before they are born. "Parents can never come in the way of the love of their children. If they oppose it, it is because what children consider love is often lust. Parents know what is good and bad for their children," he said.

Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism and Communication and Veer Bharat Nyas organised the event to mark the completion of 200 years of Hindi journalism.

Uday Mahurkar, former Information Commissioner, Government of India, spoke on the history of journalism and the growing polarisation in the field. He said journalism before independence was a "mission". In the present era, journalists should rise above Left and Right ideologies and present the truth based on the principle of Nation First, he added.

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'FREE PRESS'09 MAY.2026

दैनिक भास्कर भोपाल सिटी भास्कर 09-05-2026

वंदे मातरम् गीत के 150 साल पूरे होने पर उमेश तरकशवार की टीम ने इसे पांच भाषाओं में गाया।

भारत भवन में शुरू हुए राष्ट्रीय विमर्श में हिंदी पत्रकारिता की विरासत पर चर्चा

'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' ये लिखकर 200 साल पहले सेट किया पत्रकारिता का नैरेटिव

सिटी रिपोर्टर • भोपाल

हिंदी पत्रकारिता के 200 साल पूरे होने के मौके पर शुक्रवार को तीन दिनों के राष्ट्रीय विमर्श-प्रणाम उदंत मार्तण्ड की शुरुआत भारत भवन में हुई। वीर भारत न्यास और माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि की ओर से आयोजित इस आयोजन में पहले दिन तीन चर्चा सत्र हुए। पहला सत्र- हिंदुस्तानियों के हित के हेत..। दूसरा सत्र- डिजिटल समय में टीवी पत्रकारिता। तीसरा सत्र- उत्तिष्ठ भारत। अंत में, वंदेमातरम्.. गीत को तमिल, मलयालम, बंगाली, संस्कृत, उर्दू और फारसी में उमेश तरकशवार की टीम ने पेश किया।

इस मौके पर अयोध्या से आए आचार्य मिथिलेशनंदिनीशरण ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने के इस प्रसंग पर हम पंडित युगलकिशोर शुक्ल और हिंदी पत्रकारिता को याद करेंगे। आज की भाषा में जिसे नैरेटिव सेट करना कहते हैं, उस दृष्टि से युगलकिशोर ने 200 वर्ष पहले ही पत्रकारिता का नैरेटिव सेट कर दिया था- 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत'। यह ध्येय वाक्य बताता है कि समाचार पत्र क्यों प्रकाशित होने चाहिए। उन्होंने कहा कि डॉक्टर, इंजीनियर बनाने के संस्थान हैं। मनुष्य बनाने के संस्थान कहां हैं? यह संस्थान परिवार थे। हमने उन्हें कमजोर कर दिया है।

एआई-डीप फेक स्वर्ण मृग हैं, सावधान रहें ...

कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी ने कहा- आधुनिक तकनीक और पत्रकारिता के सामने मौजूद खतरों पर गंभीर बात की। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीपफेक को 'स्वर्ण मृग' (मायावी सोने का हिरण) बताया। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि छात्र इस मायावी जाल में फंसे, तो वे त्रेता युग में नहीं हैं। वहां सुखांत होता है। वे कलयुग में हैं। यहां एक गलती से 'वनवास' में 14 साल कोर्ट-कचहरी और मानहानि के चक्करों में बीत जाएंगे। भारत सरकार के पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहुरकर ने पत्रकारिता के इतिहास और वर्तमान ध्रुवीकरण पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता से पहले पत्रकारिता एक 'मिशन' थी। आज के दौर में पत्रकार को लेफ्ट या राइट की विचारधारा से ऊपर उठकर 'नेशन फर्स्ट' (राष्ट्र प्रथम) के सिद्धांत पर सत्य को प्रदर्शित करना चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि भारत 2037 तक आर्थिक, व्यापारिक और सामरिक रूप से श्रेष्ठ हो जाएगा। क्या भारत सांस्कृतिक रूप से वहां होगा, जहां उसे होना चाहिए? उन्होंने कहा कि पत्रकारों को 'राष्ट्र पहले' के आधार पर अपनी पत्रकारिता करनी चाहिए।

पांच भाषाओं में गाया वंदे मातरम् गीत

वंदे मातरम् गीत को 150 साल पूरे हुए हैं। इसे लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम में शाम को तमिल, मलयालम, बंगाली, संस्कृत, उर्दू और फारसी में उमेश तरकशवार की टीम ने पेश किया। वंदे मातरम् एक ऐसा गीत है। इसने कभी स्वतंत्रता आंदोलन की धड़कनों को लय दी थी। इसने बंगाल से निकलकर पूरे भारत की चेतना को आंदोलित किया।

200 साल के अखबारों व शस्त्रों की प्रदर्शनी

भारत स्वाभिमान-नागा साधु ज्ञान कोष प्रदर्शनी के साथ 200 साल के अखबारों के फ्रंट पेज प्रदर्शित किए गए हैं। साथ ही शिवकालीन, नागा शस्त्र परंपरा एवं 1857 में भाग लेने वाले वीरों के अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शित किए गए हैं। इसमें 16वीं से 18वीं शताब्दी के लगभग 2500 से अधिक ऐतिहासिक प्रादर्श हैं। इसमें मंगल पांडे की बंदूक, होशियार सिंह हंसा की बंदूक और रानी लक्ष्मीबाई (झांसी) के परिवार से संबंधित एक आग्नेयास्त्र शामिल है।